गोवापुरी संपादक डॉ. भूषण भावे, जुलाई- सितम्बर 2016, अंक 11, इंस्टीट्यूट मिनेझीस ब्रागांझा, पणजी गोवा

जीवन के विविध पक्ष और कविता

बिपिन तिवारी

कविता कवि की डायरी होती है। जिसमें जीवन की हर एक घटना दर्ज होती है। उस युग की समस्याएं जिस रूप में कवि के मनोजगत को प्रभावित करती है वही कविता में अभिव्यक्त होता है। इसीलिए कहा जाता है कि कोई भी रचनाकार अपने युग से निरपेक्ष नहीं होता। अनुपमा बसुमतारी की कविताएं भी कुछ डायरी की तरह की ही हैं। अनुपमा बसुमतारी असम की कवियत्री है। वह दो दशकों से असमी भाषा में कविताएं लिख रही है। असमी भाषा में अनुपमा बसुमतारी के कई कविता संग्रह-रूपाली रातीर घाट(1994), अनुभूति विषन्न प्रांतर(1999द्), दुःख आरू प्रेमर मोहनात(2001), जाकरंदा सोरा एक राति(2003), फागनुर ध्ूसर गोध्ूलि(2007द्), तोमार शुभकामनारे(2008) और शातिर रातिर(2005द्) कोरियाई कविताओं का असमी भाषा में अनुवाद- प्रकाशित हो चुके हैं। 'चांदनी रात का घाट' कविता संग्रह इनकी प्रतिनिध्ि कविताओं का हिंदी अनुवाद है। इस संग्रह की कविताओं का अनुवाद दिनकर कुमार ने किया है। अनुवाद में इस बात का ख़याल रखा गया है कि कविता का भाव न मरने पाये। इनकी कविताओं में जीवन के सभी पक्ष- प्रेम, क्रोध्, जिज्ञासा और वर्तमान प्रतिमानों को तोड़ने की जद्दोजहद साथ ही किसान जीवन की खुशियां, प्रकृति के विविध् रूप, मित्रों का साथ और भी बहुत कुछ। असम की मिट्टी की सुगंध् इनकी कविताओं में भरी पड़ी है। 'जकारांदा गिरने की रात', 'मछुआरे का किस्सा', 'कीचड़', 'एक पाइन पेड़ की तरह', 'ग्रीष्म की गोध्ूलि की एक सभा में' आदि अनेक ऐसी ही कविताएं हैं। साथ ही इस संग्रह की कविताओं में स्त्री अस्मिता के विविध् पहलू भी दिखाई पड़ते हंै। इस संग्रह में स्त्री अस्मिता का स्वर ही प्रमुखता से सुनाई पड़ता है। 'कमीज-1', 'गोमती किनारे एक दिन', 'खुद को ढूढ़ते हुए', 'आत्मकथा', 'कारनामा', 'नारी', 'एक पाइन पेड़ की तरह', 'शिमला 2 जनवरी '91', 'कमीज-2', 'भास्कर', 'तु', 'मूसलाधर बारिश में ध्ुली हुई बरसात की रात', 'बिल्कुल अपना' आदि कुछ ऐसी ही कविताएं हैं। इन कविताओं में कोई नारेबाजी नहीं है और न ही किसी फार्मूले पर लिखी गई हैं। इसीलिए इस संग्रह की कविताएं पढ़ने में ऊब नहीं पैदा करती। यह बात सच है कि भूमंडलीकरण आज सबसे प्रमुख समस्या के रूप में है, लेकिन कविता यदि एक ही भाव धारा में संचालित होने लगेगी तो कविता, कविता नहीं रह जायेगी। वह सिर्फ एक नारे में बदल जायेगी। यह भी सच है कि साहित्य अपने समय की बुराइयों के खिलापफ विरोध् का स्वर रखता रहा है लेकिन अंतर यह है कि उस विरोध् में व्यक्ति की मानसिक उलझनों को ही जो कि उस व्यवस्था से पैदा हुई है, प्रमुख रूप से दिखाया जाता है। अनुपमा बसुमतारी की कविताओं के इस संग्रह में इन जुमलों को लेकर कविताएं बहुत ही कम है। इस संग्रह की कुछ कविताएं बहुत ही अच्छी बन पड़ी हैं। 'सागर किनारे मछुआरों का एक किस्सा सुना था/एक छोटी कश्ती लेकर वे लोग आगे बढ़ते हैं/सागर में जाल पफैलाने के लिए और जागते

रहते हैं रात भर/जैसे जागता है सागर/...सूरज जब डूबने लगता है समुद्र में/कुछ गौरैयों के पंख फड़फड़ाने से/आकाश पर काले निशान नजर आते हैं/तभी हरहराती हुई लहरों के सरगम में/निमग्न हो जाता है मछुआरों का रस्सी खींचने का गीत...जाल में पंफसकर तड़प उठती हैं मछलियां/ध्ीरे-ध्ीरे अपना लेती हैं मृत्यु को/और चिरमृत मछुआरों के लिए मानो/पल भर के लिए लौट आता है जीवन..'(मछुआरे का किस्सा) यानी की एक की मृत्यु में ही दूसरे के जीवन की खुशी छिपी हुई है। मछलियां आहिस्ता-आहिस्ता तड़पते हुए प्राण छोड़ देती है, उनका जीवन शांत हो जाता है। लेकिन उनकी मृत्यु रात भर जागते मछुआरों के लिए एक पल के लिए जीवन की खुशी दे जाती है। बसुमतारी की एक और कविता खासा प्रभावित करती है-'आदमी के मुंह से मुझे मानो इतने दिनों से ढूढ़ रही/एक संगी की ही खबर मिली!/जो भी हो चाहे उसका रंग हो काला/मुझे कोई रंग रूप नहीं चाहिए/चाहिए एक असली संगी...'तुम निश्चिंत रहो/मैं तुम्हारी हर बात समझता हूँ/तुम अकेली नहीं हो/मैं हँू-तुम्हारे सभी सुख-दुख के समय/मैं बेवपफा,स्वार्थी मनुष्य जैसा बनूंगा/ऐसा तुम हरगिज मत सोंचना।...'(मेरा विश्वस्त और प्रिय बंध्ु 'जिमी') आज के समय में इस कविता का बहुत अधिक मायने है। भूमंडलीकरण के इस दौर में जब मनुष्य स्वार्थ में इस कदर फंस गया है कि वह अपने फायदे के लिए ही हर समय जोड़ जुगत में लगा रहता है। ऐसे में प्रिय बंध्ु 'जिमी'के माध्यम से कवियत्री इस स्वार्थी समाज पर व्यंग्य कसती है। कवियत्री को घोंघे के खोल के चटकने में एक अद्भुत छंद की ध्वनि सुनाई पड़ती है। यहां भी किसी का जीवन खत्म होता है और उस खत्म होते जीवन में खुशी के पल छिपे है। ऊपरी खोल के चटखनें के साथ ही घोंघें की मृत्यु हो जाती है लेकिन कवियत्री को उसमें छंद की लय सुनाई पड़ती है। यानी की मृत्यु से ज्यादा भयावह भूख होती है। जो आदमी को जीवन-मृत्यु के भाव को भुला देती है। 'उन दिनों धान के पौधें के बीच भरे हुए घोंघों को/बटोरती थी टोकरी की गरदन भर जाने तक/और उबालने से पहले खोल उतारकर खुश होती थी/सिकोड़कर भीतर समेटी गई जीभ को देखकर/झपटकर बाहर खींच लेती थी खाने की फर्श पर/खोल के चटखने की आवाज में था एक अद्भुत छंद/जहां छिपा था मृत घोंघों का शोक!'(घोंघा-1 द्) ऐसे ही कुछ और कविताएं अपनी तरफ ध्यान खींच लेती हैं-'बांसवन की सुराख से/सूरज के झांकते ही/वह तैयार हो जाता है/छड़ी, जापी/और बांसुरी लेकर/घर घर खुल जाते हैं/मवेशी घर के दरवाजे/दौड़ते हुए निकल आते हैं/बैल, गाय, बकरी...'(चरवाहा) 'कविता की तरह ही मैं/चाहती हूं तुम लोगों को/और तुम लोगों के मायामय शहर को/जहां तन्हा होकर भी/पाती हूं तुम लोगों को/और तुम लोगों के बीच भी/अक्सर हो जाती हूं तन्हा...'(शिलांग की शाम 'प्रिय मित्रा देशमंड, रवीन और किनफाम के लिए) वहीं स्त्री अस्मिता को लेकर इनकी कविताओं में एक अलग स्वर सुनाई पड़ता है। इनकी कविताओं में कहीं जिज्ञासा का स्वर है तो कहीं स्त्री को लेकर पुरूषों के छलावे का दुःख और इन सबसे मुक्त होने की तीव्र उत्कंठा। 'मैं एक बार देखना चाहती हूं/अपनी शीर्ण देह की छाया/चांदनी में/...मैं चीख चीखकर/सुनना चाहती हूं एक बार/अपने निस्तेज कंठ की पुकार..' ;खुद को ढूढ़ते हुए...'क्या तुम लौटा सकते हो/सूखे हुए मेरे होठों की मुस्काने?/स्वतःस्ूफर्त मेरी अनर्गल बातें/जिन्हें कहते हुए करीब आए थे एक दूसरे के/और समर्पण किया था एक दूसरे का हृदय?....तुम नहीं लौटा सकते कुछ भी/कारण तुमने छलावे का एक खेल खेला था/विश्वास की नन्हीं भावनाओं को ध्वंस किया था...'(बिल्कुल अपना) दूसरी तरफ इनकी कविताओं में अपने प्रिय के प्रति अतिरिक्त लगाव भी है-'तुम्हारे एक

आकस्मिक चुबंन/और ऊष्म आलिंगन में/स्तब्ध् हो गई थी नम गोध्ूलि की हवा...कैसे भुलाऊ उस रात की/हंसी और कथोपकथन/चुंबन और आलिंगन...जीवन का अनंत रहस्य/अंत होता प्रतीत हुआ था/महज उस एक घड़ी में ही..'(जकारंदा गिरने की एक रातद्) कविता में अपने प्रिय की अनंत प्रतीक्षा है- 'देखते देखते ढल गया/शाम का सूरज/ठिठकी ठहरी/दूर पहाड़ों की कतारें/बहती रही/ब्रह्मपुत्रा में पानी की धरा/शाम के पंछी/लौट गए अपने घोंसलों में/मांझी ने समेट लिया पतवार....पानी के पफव्वारे के किनारे/इकट्ठे हुए प्रेमी-प्रेमिका/किशोर-किशोरी/शिशु और वृद्ध/हे मेरे प्रियजन/तुम नहीं आए...'(हे मेरे प्रियजन) और जब वह नहीं आता है तो अरगनी पर टंगी कमीज में ही पूरा का पूरा महसूस करती है। 'कमीज को मैंने थाम रखा है/तुम्हारे बदन की तरह/जेब में सुनती हँू/तुम्हारे हृदय की ध्डकन/जो टकरा रही है/मेरे हृदय से/कमीज की पीठ से/हवा बनकर आती है/तुम्हारे बदन की गंध्/बटन के घाटों पर/तुम्हारे सीने की सिहरन/लहू की तरह आवाजाही करती है/मेरे बदन में/तुम अशरीरी/आवरण बनकर ढ़के हुए हो मुझे/हृदय की गहराई तक।'(कमीज-1) वह अपने प्रिय को पाइन पेड़ की तरह अविचलित देखना चाहती हैं। लेकिन ऐसा होता नहीं है सो एक गहरा आघात लगता है। 'हे मेरे प्रिय बंध्ु!/मेरे दुःख के साथी/सौंदर्य संधन के संगी/और विदीर्ण हृदय के पुजारी/अगर तुम भी खड़े रह पाते/उस पाइन पेड़ की तरह जीवन के समतल में/बर्पफ की शीतलता को झेलकर/आंध्ी की तीव्रता को सहनकर/यंत्राणा मेरे संघात की सहकर/दृढ़, ऊंचे, गंभीर और अविचलित होकर!' (एक पाइन पेड़ की तरह) 'मै श्रद्धा करती थी न झुकने वाले व्यक्ति से/जिसके लिए खोया था अपने प्रिय लोगों का संग....'(आत्मकथा) लेकिन अपने प्रिय में वह सबकुछ नहीं मिला। लिहाजा वह पुरूष के साथ की कल्पना ही नहीं करती। वह पुरूष जिसके लिए एक स्त्राी अपना सबकुछ छोड़ देती है लेकिन पिफर भी वह उसका पूरा विश्वास नहीं प्राप्त कर पाती। इसीलिए वह साथ के लिए अपने प्रिय बंध्ु 'जिमी' को चुनती हैं। जो कि एक कुत्ता है। साथ ही इनकी कविताओं में नारी की तीव्र उत्कंठा भी है। वह समाज के द्वारा वर्जित किये गये और गोपनीय उत्सों को ढूढ़ना चाहती है। जिससे कि इस पुरूष समाज द्वारा बनाए गये प्रतिमान टूट सके। पुरूष समाज ने नारी जीवन को किसी न किसी रूप में बांध् रखा है। कभी परम्पराओं के नाम पर और कभी दूसरी चालों से इसलिए कवियत्राी उन सब छिपे उत्सों को खोजना चाहती है। 'नारी की संवेदना के गोपनीय उत्सों को/ढूढ़ना चाहती हूं मैं/ढूढ़ना चाहती हूं वह सर्वशेष नारी/जिसके भीतर बेटी,पत्नी और मां के बाद भी/जीती रहती है एक अन्य नारी/मैं जानती हूं ईष्र्या,प्रतिशोध् परायणता नारी के सहजात गुण/और जानती हूं त्याग,ममता और सहनशीलता के बावजूद/नारी की छिपी हुई विनाशकारी कामना के बारे में...नारी के भीतर एक महासागर की खोज करना चाहती हूं मैं...नारी की असंपूर्ण गाथा की जगह/एक सौंदर्यशिक्त मानवीय सुर बनना चाहती हूं मनुष्य के कंठ में।/जो नारी,पुरूष अथवा शिशु की सीमा लांघकर/पृथ्वी की सुंदरता की कथा कहेगी।'(नारी) क्योंकि इस पुरूष समाज में स्त्रियों की एक इमेज बना दी गई है। वह त्याग, ममता की प्रतीक है। वह मां, बेटी की इमेज में ही पूरी जिंदगी बिताने को मजबूर है। यानी कि दैवीय आवरण में उनको रखकर मानव समाज से अलग-थलग कर दिया है। इन सबसे अलग वह ऐसी नारी की छवि तलाश करना चाहती है जो इन सब के बाद भी बची हुई है। आज के दौर में जब स्त्री विमर्श साहित्यक विमर्शों में प्रमुखता से हस्तक्षेप कर रहा है तब इस कविता का मायने और बढ़ जाता है। इस कविता में स्त्री की नई इमेज की तलाश है। यहां मुक्ति की आकांक्षा नहीं है

बल्कि तलाश है। जबकि आज के स्त्री विमर्श में मुक्ति ही प्रमुख हेतु बन गया है। इस संग्रह में एक कैंसर पर कविता है। कविता कैंसर से पीड़ित बहन के लिए लिखी गई है। यह कविता उस बीमारी से जूझ रहे लोगों की विड़म्बना कहती है जो जिंदगी के पलों को मृत्यु के अप्रत्याशित डर के साथ जी रहे हैं। 'उसके शैशव की छोटी-छोटी सहेलियां/जिनके संग वह खेलती थी/हमारे घर के सामने बकुल के नीचे/धुंधली रोशनी में अथवा चांदनी में/गुंजरित हो उठती थी घास/उनके खेत के गीतों से...जीवन के इक्कीस खेल पूरे होने से पहले/वह चली गई थी स्वामीगृह के कड़े नियमों के बंध्न में/और प्रखर धूप की दोपहरों में बन गई थी छांव।...कुछ दिनों के बाद रूग्ण वेश में उतर आई/एक शीर्णकाय वृद्ध/और उदास होकर बैठी रही उसके सामने...जीवन-मृत्यु'(कैंसर से पीड़ित अपनी बहन के लिए) इन कविताओं के माध्यम से कहा जा सकता है कि कवियत्री के सरोकार बहुत व्यापक है। इस संग्रह में एक कविता नारी के उदय को लेकर है। कविता नारी के जन्म को एक नए रूप में परिभाषित करती है। 'शिला की पोशक, शिला के गहने पहन/मैं बोल नहीं पा रही अपने शिला के होंठ से/वे आकर निहार-निहारकर देख रहे थे/उखड़े हुए मेरे पुराने अंशों को/हौले-हौले छूकर देखा था....उनके हाथ के जादू से या हृदय के संयोग से/एक दिन मेरा शिला का हृदय ध्ड़कने लगा/और मेरी बांहों ने भींच लिया उन्हें/तभी से हूँ मैं नारी।'(भास्कर) पूरे संग्रह की कविताओं को पढ़ते हुए लगता है कि संग्रह की कविताएं वास्तव में असम की मिट्टी की सुगंध् से भरी-पूरी है। भाषायी आधार पर कहें तो भाषा कहीं भी कोई अवरोध् पैदा नहीं करती। जबकि यह अनुवाद है। हिंदी भाषा में ऐसी कविताओं की अपेक्षा रहेगी। अनुपमा बसुमतारी की कविताओं में जीवन के प्रति तीव्र उत्कंठा है। कविताओं में निराशा का स्वर नहीं है। जबकि आमतौर से कविताओं में जीवन कम निराशा के चित्रा ज्यादा होते है। इस लिहाज से इन कविताओं का एक अलग मायने है।